DETAIL TRANSCRIPTION

INTERVIEWEE : AMRESH RANI

TIME AND DATE: 1 P.M., 18TH JUNE, 2001

PLACE : PREM VIHAR, KARAWAL NAGAR, DELHI - 110094

⇨ आप बताइए कि आपने कहाँ से पढ़ाई शुरू की ?

पहले तो हम सरकारी स्कूल में डाल दिए, हमारे पिताजी ने। फिर Private में डाला। फिर हमारा दिमाग सही भी हो गया था, लेकिन पिताजी ने हमारे पढ़ाया नहीं। क्यों नहीं पढ़ाया ? वो पसंद नहीं करते थे बाहर निकालना। और कहते थे - माहोल ठीक नहीं है। कि कहीं नी पढ़ लिख के 'वो' बनेगी। घर का काम ही करेगी और ये है वो है।

अब हमारे साथ की लड़कियाँ कोई कुछ कर रही है, कोई कुछ कर रही है। कोशिश तो हमने भी बोहत करी - कि पढ़ी लिखी तो बोहत वो होती है। अब जो हमारे साथ की थी - उनमें सभी पढ़ी है, कोई इंटर कर रही है कोई कुछ कर रही है। एक हम ही रह गए।

मम्मी जो हमारी थी - कुछ ज्यादा ही वो थी। काम का दबाव कर दिया हमारे ऊपर ज्यादा। क्योंकी सबसे

बड़ी मैं ही थी। तो जिम्मेदारी हमारे ऊपर ही थी। वैसे बच्चे बच्चे हो गए, वो भी हमें ही संभालने थे उपरा-तली हो के। मम्मी जो हमारी थी बोहत ही कैसे टाईप की थी। काम पूरा लेती थी। फिर शादी करके भी हमें परेशानी ही परेशानी हुई। अब चार साल तक तो हमारे बच्चे ही नहीं हुए। फिर हमारा इलाज करवाया। हमारे मां बाप तो चाहते थे कि बिना बच्चो के तो कुछ है नहीं, तो उन्होंने ही हमारा इलाज करवाया। जब जाके मेरे बड़ी लड़की हुई। जब भी इन्होंने (पति) काम छोड़ रखा था। जब भी इतनी बुरी हालत थी की बहुत ज्यादा।

फिर हमने ले एक चिट्ठी डाली अपने घर कि हमें ले जाओ आकर। यहां (ससुराल) तो कुछ है नहीं। क्यों? कि पहले बच्चे मे तो ये होता है कि पता नहीं कितने पैसो की जरूरत पड़ने लगे। जब हमने ये कमरा बनाया था। फिर कर्जा उतारने के लिए हमारे पास नहीं था कुछ। फिर हमारे घर वालो (मैको वालो ने) ने ही कर्जा उतारा। और पैसे भिजवाए। ब्याज पर लेकर किसी से। हमारा भाई देके गया पैसे और मैं वहीं पे (मैके में) रही। फिर मुझे वहां भी बोहत मुश्किल का सामना करना पड़ा। क्योंकी जिसकी ससुराल में कदर होगी उसकी ही मायके मे भी होगी। चाहे कोई लाख करे, फिर भी कोई न कोई कुछ कह ही देगा। वहां पे जब ऐसी हालत मे, जब रिश्तेदार आते थे तो शर्म आती थी, कि जो चीज जहां की है वहीं तो होनी चाहिए।

फिर जब मैंने चिट्ठी डाली तो मेरी माँ कहने लगी कि जो चीज बंद की है इसके साथ तो बुढ़िया (सास) है और मैं अपनी अमरेश को यहीं बुलाऊंगी क्यों ये स्थिति तो इन्हे पता नहीं थी कि इन्होंने (पति) काम छोड़ रखा है और मेरे बसका वहां रहना नहीं है। मोहल्ले वाली ये कहती थी कि इतने दिन मे तो बच्चा हो रहा है और फिर भी मायके मे रह रही है। फिर जब मेरा भाई लेने आया, तब मैं अपने घर नहीं गई, मैंने सोचा वहां जाके तो शर्म आएगी इससे तो अपने घर ही अच्छे।

फिर जब सारे रास्ते बन्द हो गए, फिर मुझे स्कूटर कर के आना पड़ा। फिर मायके मे मुझे बोहत बात सुननी पड़ी और मेरी माँ ने भी ये कहा कि जब तुझे लेने भेजा था तब तो तू आई नहीं थी और हमने भी सबसे कह दिया था कि अमरेश नहीं आएगी। अब मोहल्ले वाली क्या कहेगी? तुझे आना था तो तभी आ जाती। फिर बोहत कुछ सुनना पड़ा इन्ही की वजह से, इन्ही की कमी के कारण।

वहां आने के 1½ महीने बाद मुझे लड़की हुई। फिर जब भी हमें बहुत रोना आया, कि इतने उजाड़ मे हुई और कोई आदमी नहीं पास है तो कम से कम पता तो ले आए। फिर जब इनका काम भी लग गया और फिर हमें लेने नहीं गए।

⟹ आपने कभी सोचा हो कि पहले लड़की नहीं लड़का होना चाहिए था?

नहीं मुझे लड़की, लड़के का कुछ नहीं है। ये नहीं कि लड़की हुई है क्योंकी चार साल के बाद तो ये हुई

और पहला बच्चा तो चाहे कुछ भी हो अच्छा ही लगे। बल्कि हमारे घरवालो को हुआ कि - एक लड़का सा हो जाता हमारे घर मे। तो हमारा फर्ज़ सा निपट जाता ले दे के, लेकिन मुझे कुछ नही लगा। फिर हमारे घर कौने खबर भी नही करी यहां।

फिर जब हमारी नन्द की कोई रिश्तेदार खत्म हो गई तो तब ये हमे लेने आए। फिर इन्होने ये भी नही देखा कि एक, डेड़ महीना हो गया, क्या हुआ ? जा के देख लो। फिर जब ये लड़की हुई तो मैं बोहत रोई। तब मैंने सोचा कोई नही आया देखने जब आदमी भी है, सब कुछ है और इतना मैंने सामना कर लिया अकेली ने। तो बताओ क्या जिंदगी है। जब फिर भी नहीं आए। एक, 1½ हजार रूपया हमारे घर को ने ही लगवाया। जब भी इलाज हमारे घर वालो ने ही करवाया था। जब भी यहां का कोई कुछ नहीं।

फिर जब हमारे घर कोई मर गया तो ये गए। जब भी इन्होने दुकान पे ये नही पूछा कि क्या हुआ, क्या नही ? (about the birth of the baby) फिर जब हमारी नन्द गई दुकान पे, उनसे पूछा कि क्या हुआ है अमरेश के ? कि लड़की हुई है। हमारे भाई ने बताया। फिर उसने ही बताया वहां - जा ! तेरे लड़की हुई। और जब आए वो वहां पे।

बस फिर तो ये हमें 100 रूपये देके आए। क्या होवे 100 रूपये मे ? कुछ भी नही। - कि ले। -खा, पी ले। मैंने कहा कि क्या होवे 100 रूपये में, तो कुछ नही आता 100 रूपये मे।

⇒ तो लड़की घर पे हुई थी ? या Hospital में ?

हुई तो हमारे घर पे ही थी। 500 रुपये लगते हैं, और डाक्टरनी वगैरह सब हमारे घर वालो ने ही करी थी। फिर भी इन्होंने नहीं देखा कि क्या हुआ।

फिर जब ये एक, डेढ महीने की थी जब मैं आई थी। फिर ये लिवाने गए थे। फिर मैंने दूध बूध पिया खूब। फिर ये दूसरी तो ऐसे ही हो गई। मैं चाहती भी नहीं थी जब-तो- ये तो ऐसे ही हो गई थी। फिर ये लड़का तो पाँच साल बाद हुआ। फिर उसके बाद मुसिबत ही मुसिबत आई हमारे ऊपर। बस ये लड़की तो ऐसे ही आ गई। बस ये लड़का तो कहना - नसीब का ही है। जब ये लड़की हुई तब तो ठीक था काम (पति का) फिर उसके बाद छोड़ दिया। जब लड़की हुई तो मैंने सोचा क्या फायदा घर जाने का। अपने घर ही अच्छे। फिर घर को ने भी बहुत कही। अब वो भी 10 दिन को ही बोलते थे कि पता था कि खाने वाले को कुछ मिलता नही।

पहले हमारे पिताजी की मां बाप खत्म हो गए, जब हम छोटे थे। हमारी मां बो थी वो बोहत गरीब घर की थी और हमारे तो घर भी था, ढोर भी था और जमीन भी गांव में। घर संभालने वाला कोई नही था। हमारे क्यो? दादी बाबा थे नही। हमारे वो ताऊ थे उनकी भी शादी नही हो रही थी। हमारे ताऊ ने अपनी तो शादी करी नही, हमारे पिताजी की करवा दी। हमारे नाना ने कहा भी कि हम अपनी दोनो लड़कियो को तुम्हारे ही घर पे ब्याह देंगे। क्यो? अच्छा काम

था। ये सोचा था कि एक गाँव मे रह लेगी। लेकिन हमारे ताऊ जी माने नहीं, कहा कि मुझे तो अपने छोटे भाई की ही शादी करनी है। फिर जो हमारे पिताजी थे वो इज्जत के बोहत थे उन्होने हमारी माँ को कभी भी गाँव में नहीं छोड़ा। बल्कि सब कहते थे कि गाँव मे छोड़ दे और आठवे दिन आ जाए करे। पर फिर भी उन्होने एक भी दिन गाँव में नहीं छोड़ा। बच्चों के किराए पर ही रहते थे। कि मुझे तो कुछ नहीं चाहिए- इज्जत चाहिए।

फिर ऐसे करके हमारे माँ पिताजी के 8 बच्चे हुए। हमारी जो माँ थी और पिताजी थे वो सीधे टाईप के थे। वैसे तो वो कहते थे कि बोहत बच्चे हो गए, डरते थे। पर अब क्या करे, वो operation से डरते थे। फिर जब इन्द्रा गाँधी मरी, तब हमारी माँ का operation हुआ। अब हमारे पिताजी ने operation तो देखा नही था और वो हमारी माँ को बोहत चाहते थे कि कही वो मर ना जाए। इसलिए operation से बोहत डरते थे। वो कहते थे कि करवाना हो तो करवाले नही तो टाल कर। ऐसे सीधेपन में ही हो गए इतने बहन भाई ज्यादा। फिर कहने लगी कि खामा-खवा ही परिवार बढ़ाया, अगर हमे पता होता कि कुछ नही होता तो ऐसे operation तो हम रोज करवाते। ये तीन लड़की बाद हुई हमारे भाई के। नही तो दो लड़की थी, मेरा भाई था और मैं थी,

फिर पिताजी हमारा बोहत लाड़ करते थे, और माँ हमारे बोहत कैड़े टाईप की थी, बोहत काम लेती थी हमारे से और मार भी देती थी।

और T.V. का हमें बोहत शौंक था। पहले बोहत T.V. देखते थे हम। तो हमारी माँ कहती थी जहां भी जाएगी, काम पूरा करके जाईयो। अब डरना भी पड़ता था। वो मार देती थी।

फिर एक ऐसे ही दिन मैं स्कूल से आई - अब स्कूल मे दिमाग तो ऐसे ही खराब हो गया था और बर्तन और हमारे सामने धर दिए। अब कुछ भी हो थे बचपन ही खेलने का होते। अब हमारी 'निम्मी' है वो कितनी छोटी है? और तब मैं डर के मारे बर्तनो को देख के रोई। माँ कहने लगी, इन बर्तनो को देख के रोई होगी। मैंने कहा नही तो, मुझे तो लड़की ने स्कूल मे मारा है। वो लड़की कहने लगी - बोहत हराम है तू! पहले तो अपना कहा खो दिया - पहले सरकारी स्कूल मे कहा बिठाते थे हम। बोहत हराम है तू - अपनी माँ को लेके आई है। मैंने कहा कि - और क्या, डर के मारे नही तो वो मुझे मारती - कि बर्तनो को देख के रोई। उसने हमे कोई सुख नही दिया। जिम्मेवारी हमारे ऊपर भी वहां भी बहुत रही। ना कोई हमारे होने मे आता था, जैसे बच्चे हो गए हमारे - सब कहते थे, बस काम करती रहती है। जिम्मेवारी हमारे ऊपर पूरी रही, सब कहते थे।

T.V. तो हमने देखा ही नही। पूरा काम करके फिर देखा, कही नही देखा। फिर दोनो बहन, आई, पूरी, पूरी रात हो जाती थी हमे, 3, 3 Picture देख लेते थे। जैसे दिन निकल गया। हाल पे भी खूब दिखाई।

हमारे पिताजी ने। फिर जब हम जवान से हो गए, फिर नहीं गए। फिर तो जैसे किरायेदार जा रहे, रिश्तेदार जा, रहे, मामा जा रहे, उनके साथ चले गए। मतलब कोई रुकावट नहीं थी। मतलब कोई रुकावट नहीं थी। मतलब कोई वहम नहीं था कि बाहर जा रहे हैं जाओ। मतलब अपने बच्चे की आदत सब जाने। मतलब हमें शौक था। तो फिर हम ये ही सोचते थे कि, हमें ये, ये मिलेगी, ऐसे, ऐसे सामान मिलेगा, पलंग पे हम चादर बदलेंगे, हम सहेली सब बात करते थे। मका ऐसा घर मिलेगा। ऐसा थोड़ा ही पता था कि लेस भी नहीं होगा घर में। ये था, मक ढंग का मिलेगा। कुछ मेरे पिताजी भी थे और पहली शादी थी घर में। तो पहली शादी में तो ये सोचे इंसान कि पता नहीं कितनी अच्छी करेगा। लेकिन जो ज्यादा ध्यान के पिये उसे गाधला ही मिले। हमारे पिताजी ने एक से एक लड़की देखी। फिर एक से एक देखे। यहां पे तो मेरा जोड़ी संजोग था। नहीं तो पिताजी यहां करने को ----- सब कह रहे थे - अच्छा है, अच्छा है, सुन्दर है। कहने को बोहत लड़के देखे हमारे बारे में, फिर ये ही लिया। फिर पिताजी ने कहा कि मुझे सुन्दर नहीं चाहिए, ये देखूंगा कि कैसा है उनका परिवार। मुझे काले, गोरे का नहीं। कभी ऐसा ही ना हो - कुत्ता सा ही !! देख तो लूं, कम से कम।

बस फिर ये यहां है। देखने में ये सही थे। ऐसी कोई लम्बी दाढ़ी मैं भी नहीं थी। देखी भाली मैं भी सबकी थी। मेरी जानी हुई रिश्तेदारी से ही हुआ ये रिश्ता। सबने ये कह दिया कि ठीक है। काम भी अच्छा है। यहां प्लाट भी (दिल्ली में) सब ठीक है। इसलिए हमारे पिताजी ने जब सोचा कि सब कुछ ठीक है तो हमें कुछ दिया ही नहीं। अब रेडियो थी, वो भी ऐसी ही। अब T.V. का शौक था, वो भी हमने जो बनाया था तो सामान जैसे कि Dressing Table मिलेगा, ये मिलेगा, वो मिलेगा वो ऐसे का ऐसे ही रखा है। अब जो क्वर है वो भी ऐसे ही रखा है। अब वो भी दूसरी (लड़की) को देना पड़ेगा। 13, 14 साल हो गए, माँ बाप ने हमारे कुर्सी दिया, मेज़ दिया, पलंग, संदूक, सीने की Machine ऐसे, ऐसे item दिए।

हमारे पिताजी कोई पुराने ख्याल के नहीं थे। कुछ भी कह लेते थे हमें। उन्होंने हमें सब कुछ दिखाया मतलब T.V. हाल का हमें बहुत शौक था। हाल पे भी हमने सब चीज़ देख रखी थी। T.V. का भी हमें इतना शौक था कि चाहे खाने को ना मिले, लेकिन T.V. मिल जाए हमें देखने को। T.V. का इतना शौक था। बस ये ही अरमान थे कि अच्छा सा घर हो, ज्यादा भी नहीं, अच्छा हो, घर ठीक हो। सब चीज़ हो। लेकिन गाँव में शादी हो गई, सब कबाड़ा हो गया ? सामान का भी, ना वहां लाईट ना कुछ। गाँव में तो ऐसे ही है

सब कुछ। तो अब ये बता - फिर अब ये कहाँ आ गए ?

मेरी समस्या को देखते हुए मेरे पिताजी ने मुझे पढ़ाना चाहा था। चाहा था तो भाईयो को भी पढ़ाना लेकिन भाई तो हमारे पढ़े नही। उन्होने तो पढ़ाई से मन ही मोड़ लिया। पिताजी ने तो हमारे बोहत कोशिश करी। लेकिन हमारे छोटे भाई ने तो ये ही काम सीख लिया (Motor Machine का) और बड़े भाई ने नाई की दुकान खोल ली। और ये सोच लिया कि सरकारी नौकरी से क्या फायदा ?. हमारी न अब लगेगी न तब लगेगी। इससे अच्छा दुकान मे अपना काम ही कर ले। इसमें कई 1000 रुपये कमा लेते है। पहले तो पिताजी, दोनो एक ही दुकान पे रहते थे, पिताजी और भाई। फिर भाई ने एक अलग दुकान कर ली। अब जो हमारे पिताजी थे, वो तो चाहते नही थे हमे पढ़ाना। लेकिन हमारी जो बहन है ना उन्होने ये Machine लगा रखी थी। उसमे - Art बनाने वाली फाईल के फीते बनते थे। जो पीछे बाँधते है। उसमे पैसे 500, 600 - 700 रुपये महीने ही उठा लेते थे तो हमारी माँ ने उन्ही के पैसो से पढ़ाया। माँ को तो हमारे भाई खूब धमकाते थे। लेकिन माँ ने ऊपर को दो के पढ़ाना शुरू किया। कितनी ही पढ़ती थी वो लेकिन बीच वाली बहन बीच मे ही खत्म हो गई थी। और ये है कि उसने इंटर के पेपर दिए है और जो छोटी थी वो नौवी मे फेल हो गई थी दो बार। फिर उसको हटा लिया था फिर अभी उसकी शादी कर रहे है।

⇒ और अपने काम के बारे में ?

जब शादी हुई, तब तो ये मायापुरी में काम करते थे। जब मैं पहली बार रह के गई (ससुराल में) 20,-15 दिन के, तब तो ऐसे दिन कटे कि मैंने सोचा कि अगर हमारी ज़िन्दगी रही तो, तो हम तो बहुत अच्छे रहें। बस हम इनकी बहन के यहां रहते थे। ये पता नहीं था कि ये तो ननद के यहां हो रहा है सब कुछ। फिर तो सब कुछ पहरना, खाना, पहरना, सब कुछ - V.C.R. भी चलाया। मतलब हर चीज - रोज घुमाने भी ले जाते थे। और ये है वो है। अब ये पता नहीं कि यहां जे अभी, अभी है फिर है ही नहीं। जब दूसरे को आई तो फिर यहीं पर रही। तो मैं कहने लगी कि यहां से चल। फिर तीसरी बार हमारी सास, हमारी ननद, हमारे घर ही आ गए। फिर हमारा तो जी लगे नहीं था यहां पे। हम भाग भाग के नहीं जाते थे (ननद के यहां) फिर हम खेत के रहने वाले थे। पहले तो हम कुछ भी नहीं करते थे अब तो बहुत कुछ करना पड़ता है। लगता था कि पता नहीं कहां आ गए ?

फिर इन्होंने तो Factory में काम किया, 2-3 साल काम किया भी। गुजारा गुजारा तो कुछ चलता नहीं था बस ये था कि अपने घर से ही सब कुछ करते थे लाते थे अपना। शौंक तो सब ऐसे ही चले गए। अब तक भी हमारा शौंक उन्होंने ही पूरा किया। कोई भी ज़िम्मेवारी है नहीं था हमारे ऊपर। ना हमने कपड़ा सीला ना कुछ।

फिर इन्होंने मिल में काम किया। इन्हे कहा भी बोहत कि मिल मे काम न करे लेकिन फिर भी इन्होंने मिल मे काम किया।।

⇒ मिल और Union के बारे मे आप थोड़ा बताईए।

इन्होंने Union पैसे बढ़ाने के चक्कर में करी। अब जैसे लड़के कर रहे थे, इन्हे मना भी करा कि ऐसे मत करे। फिर उन्होंने तनख्वा तो बढ़ाई नही। फिर उन्होंने इनका हिसाब कर दिया। नौकरी तो अच्छी थी सब कुछ था। क्या पता कितनी तनख्वा होती? जभी इतना सब कुछ था। लेकिन इन्होंने Union करके वहां से पैसे ले लिए। फिर यहां जब से नौकरी छूटी है, धक्के ही धक्के खा रहे हैं। अब कितनी ऐसी तरह की Factory पकड़ी जिसमें काम याद नही हुए। अब ये है कि जब कमाएं तो कुछ परेशानी ना उठानी पड़े।

अब बार, बार ये कभी कोई बहाना बनाए कभी बहाना बनाए और Factory होकर आ जावे। अब बार बार ये कहता था कि मेरे क्या बसकी। काम छूट जाता है तो आदमी कोशिश तो करे काम पकड़ने की। एक जगह पकड़ने की कोशिश ही ना करते। हम ही घूमेगें इधर उधर कि काम लगा हो, कुछ है, तभी लगेगें काम पे अब बैठे रहेगें। एक दूसरे से बात भी नहीं करेगें। पड़ोस मे भी नहीं जाएगें। अब तो आदमी किसी के पास आता जाता है तभी तो जानकारी होगी। वैसे तो होती नही होगी। उसे तो राम नाम मे भी टोटा। किसी से बोलते ही नही। आज तो कोई पड़ोस मे ही नही जानता हमें, कि है कि नही है।

किसी के यहां आना, जाना ही पसंद नहीं करते। अब कितनी ही Factory छोड़ दी। अब ये Factory बन्द हो गई थी तो हमें ज्यादा ही मुसीबत आ गई थी। हमने हर तरह के काम करे। ये करावल नगर की है - सरदार की रबड़ वाली Factory थी पकड़ी गई। हमें तो पता नहीं पर कितनी बार तो ऐसा होता था कि ये मायापुरी Factory में नौकरी करने जाते थे और नौकरी लगी रहती थी पर ये जाते ही नहीं थे। ये लड़की भी छोटी थी जब की बात है ये। टिफिन लगावा, लगावा के ले जाते थे, ऐसे रास्ते में से उल्टे आ जाते थे। बस यू ही होने लगा। फिर कितने ही दिन कुछ होगें ऐसे ही आते-जाते। फिर एक दिन कहने लगा - 'दिके आज तो मैं तुझे सच बताऊं कि वहां तक तो मैं पहुंचता ही नहीं'। मैंने कहा - पहुंचते ही नहीं? कहने लगा कि मेरे तो ऐसे दिमाग मे हो जाता है कि मुझे तो पता नहीं कोई दिख जाता है, यूँ हो जा, पता नहीं क्या। Factory तक तो मेरा दिमाग चला जाता है लेकिन अन्दर बड़ने को मानता नहीं। मैंने कहा - ऐसे भूत चक्कर तेरे पे ही चल रहे हैं!! जो मतलब ऐसा कोई इन्सान है, नौकरी तो अब हर कोई आदमी करता है। तो क्या? सब हो जाएगा - बस ये ही कहता रहता है।

फिर मैं इनकी बहन के यहां गई। फिर हमने अपने नन्दोई को कहा। उनसे तो ये डरता है - वो तो मार भी देगा। उनसे डरे। क्यूं उनकी जिम्मेवारी है। जब सबसे बड़े वे ही है, इनके घर के चौधरी वे ही है।

उनके बिना हमारी सास कुछ भी नहीं करती। हमें वो कुछ भी नहीं समझती। कुछ भी काम हो वो उन्हे ही मानती है। फिर वे ही इनको ले के गए। कहने लगे इसने तो बालको की जिंदगी बरबाद कर दी। बल्कि हमारी ननद के सब चीज़ की मौज है लेकिन वो हमारी तरफ से ही दुखी है। वो ये चाहती है कि ये भी अपने बच्चो का अच्छी तरह से भविष्य करे। कुछ समझिये। बच्चो का सब चीज़ को ही करता है - खाने का भी, पहरने का ओढ़ने का भी। अगर ये अच्छी तरह कमाए तो अच्छी गृहस्थी चले। वो कहती है कि मुझे कोई दुख नही, मुझे तो तुम्हारी तरफ की चिंता है। उनकी सास भी कहती है कि हमारी बहू को बोहत दुख है।

एक तो बस पीहर की चिन्ता मारी जाते इसे। अब वे भी इनसे दुखी होंगे। क्यों रिश्तेदारी में सबको पता चलता है जब नौकरी छुट जाती है तो। हमें भी बोहत नीचा देखना पड़ा - न्यू कहते है कि - हमने इतनी जगह सिफारिस करके तेरी नौकरी लगवा दी - लेकिन फिर भी तू आदमी नही बनता। अब भी उन्होने कहा कि अब भी नौकरी करनी हो तो हमें बता दियो। अब ये पानी-पत तक धाके इना आए, फिर भी इन्हे काम नहीं मिला, कुछ भी।

अब इन्होने ही सब्जी का काम शुरु किया था, कांटा, बांट (तराजू) लेके दिया था। आलू की बोरी दी, प्याज़ की बोरी दी। उसमें भी ना कोई फायदा हुआ। उसमे भी घाटा ही घाटा रह गया। अब इनके साथ मैं, हम भी परेशान हो।

अब हमने

अब हमने, जब हमारा छोटा सा बच्चा था तब भी हमने काम किया जाड़े में। अब ये घर मैं बैठे है। फिर बच्चो को इनके ऊपर छोड़ हमने काम किया, इतना काम किया कभी करा भी नहीं होगा। हम तो 'बनिया की बुलबुली बान'। कभी हमने खेत भी नहीं देखे, घर मे ही कर लिया जो करना था। (और यहां बाहर निकलना पड़ता है। ये ही घर कर लिया जो कर लिया। हमारे पिताजी तो यही कहते थे कि इससे अच्छे से - बड़े परिवार मे ब्याह दो - तो ये तो रोती ही रहेगी कर्मों को। पिताजी ने पता नहीं कहां छोड़ दिए और भाग। इसके लिए तो ऐसे ही बस। अब किस्मत है - हम भी बोहत परेशान हुए। फिर सब्जी भी लगाई। सब्जी भी बेचने नहीं जाते थे अकेले मेरे बिना। मैं ही ले के जाती थी। शर्म भी इतनी आती है, कांटा और वो भी हमें ही लेके चलना पड़ता था अब इसके साथ जाड़ो मे। वहां भी रहना पड़ा था। और सब जिम्मेदारी हमारे ऊपर ही है।

अब हम तो रास्ता भी नहीं जानते थे - 'गोंडा' का। फिर गोंडा तक से राशन ढोया लाने। यहां तक कि जब हम घर से बाहर भी नहीं निकले थे। भीहर मे। फिर भी हम राशन लाए थे। यहां तक कि यहां तक की पैयल भी मैं लाई मैं गोंडा से। तेल भी मिट्टी का, राशन भी - सब ढोया इतनी मुसिबत में और कहने को यू........

जब आया पुरी नौकरी करते थे तो तनख्वा बहुत कम थी। गृहस्ती हमारी चलती ही नहीं थी। फिर भी ये है कि हमें चलानी पड़ती थी। क्यो, जब तो मैं भी बाहर निकलना नहीं जानती थी। इतना सब कुछ। बस ये ले है के हम काम चलाते थे। फिर ऐसे ही वहां से भी इन्होने छोड़ दी। फिर वहां रहे, उन्होने एक पकड़ी। कितने दिन बाद फिर ऐसे ही हटे रहे। फिर हमने स्कूल में भी काम करा, मील में भी लगे। जब भी इसे महसूस नहीं हुई। फिर स्कूल में भी काम किया (आया का)। फिर मे Factory में भी काम किया चनकर वाली में। इसमें भी किया। हा बटन वाली मैं। जब भी इसे महसूस नहीं हुआ। काम नहीं मिलता था। अब ऐसे तो कोई है नहीं जिसे काम नहीं मिलता हो। का जो करना है तो कोई भी कर सकता है। काम तो करने को बहुत है। लेकिन इनसान को समझ हो अब हर बात को यही कह दे। बच्चों की तरह जिद कर दे। बाहर जाएं नहीं कि काम तो मिलता ही नी, मैं करूं ही क्या। जिम्मेदारी हो समझनी ही चाहिए इनसान को, अब कोई भी इनसान हो। जिंदगी तक ठोई, बेलदारी भी करो मैंने जब शादी हो जाती है तो -- पर वो ही जिम्मेदारी नहीं समझते। परेशान करते है, बच्चों की तरह। कोई भी जिम्मेदारी नहीं समझते। अब भी कई Factory बदली इन्होने। अब भी हमने लाख बार समझा लिया, जैसी भी Factory मिले, चाहे 800 मिले, चाहे 900 मिले, आदमी को एक ही जगह होना चाहिए। तुम कहीं भी काम ना

फिर ऐसे ही पीछे सी मैं बीमार हो गए थे। जब ये हो गया था इनको T.B. की गांठ बन गई थी। जब भी मैं इन्हे उठाए फिरी रात दिन। जब private इलाज करवाया। जब भी कुछ नही हुआ। जब भी मैं ही ले गई सरकारी मे। जब भी हमे बहुत मुसीबत उठानी पड़ी। जैसे गांठ हो रही थी इनके - इतने वो है कि इतना तो आदमी बता दे - मैं पढ़ी हुई तो हूं, लेकिन थोड़ी हू - इतना तो बता दे कि ये गाड़ी कहाँ जा रही है, नही जा रही है। आप तो उसमे चढे नही, मुझे गलत बस मे चढ़ा दिया। अब कितनी देर तक मुझे जाना पड़ा। उसने - बस वाले ने मुझे दो-तीन नाम रखे - कि जब stand पे अगले पे उतारा। अब वो मुझे ऐसे ही ले जाता तो मैं कहां उतरती। ना मेरे पास पैसा, ना कुछ। अब वो (Conductor) मुझसे कहने लगा - कि तुझे पता नही इतना कि - मैंने कहा कि जब वे ही चढ़ रहे थे, मैंने सोचा यही होगी अब खुद तो उतर गए, मुझे उसी मे चढ़ा दिया। अब वहां मैं खूब रोई। मुझे बहुत महसूस हुआ। मैंने कहा बता इतनी राल पड़ रही थी कि बोला नही जा रहा था। इतना वो हो गया था। तेरा बहादुर का मैंने मुंह भी नही देखा था कभी भी। अपने बारे मे भी कभी नही, कभी नही गई थी। तीन बच्चे भी हुए - कभी नही। मुझे इतना डर लगता था। लेकिन इनके बार मे मुझे जाना पड़ा। क्यो? जब आदमी है; तब तो कैसा भी हो। मुझे तो साथ देना ही पड़ेगा। अब कहां जाऊंगी। और फिर वहां २ पर कागज बनवाए।

उसने पूछा कि इनका नाम क्या है ? अब मैंने कहा पूछ ले, कम से कम अपना नाम तो बता दे यहां पे। अब wife नाम बताए तो अच्छा भी नही लगता। फिर मैंने जब भी नाम नही बताया। जब भी ऐसे हो गए कि ये कुछ नही जानते। मै कहने लगी कि - जब भी ऐसे होगे कि ये कुछ नही जानते। मैं कहने लगी कि जी इनका नाम बीरपाल है। कहने लगे - कि क्या लगे ये आपका ? मैंने कहा कि मेरे आदमी है। इतनी मै -- मुझे उस टाईम पे भी इतना रोना आया। मैंने कहा - कि क्या मेरे देव - आज मेरा कोई भी नही है जो मेरा साथ दे दे। मैंने कहा कि क्या पढ़े लिखे का फायदा? मै क्या इनकी उम्र जानू? कि भई इतना तो इन्सान बता भी सकता है। बहुत अहसास हुआ, बहुत रोई मैं थक के रोई। मैंने कहा कि बता इतना भी सीधा- -पन किस काम का ? जो इन्सान पढ़ा भी रहा है, दिल्ली मे इतनी दूर रहता है। पर आज तक भी कोई कौना नही ~~जानते~~ जानते। बिना address के कही भी नही जा सकते। अब ये दुर्गा का पापा है (पड़ौसी है, -जो डाकखाने मे काम करता है) वहां भी नौकरी लगानी चाही। कही Factory तो मिली भी नही। भारी काम नही कि, चौकीदारी भी नही करी। अभी आदमी को जो भी काम मिल जाए, जो परेशान होगा तो नही कर लेगा। अब इन्होंने नौकरी भी लगानी चाही। अब वहां भी ये तीन बार किराया खो दिया। जिसमे 25-30 रुपए जाते है। अरे रास्ते से ही आ जाते है उल्टे।

लक्ष्मी नगर का रास्ता भी नहीं पाया इसे। फिर नौकरी वहां पे भी नहीं लगी। अब हम ही खुशामद करते फिरेंगे कि लगा लो, या ये वो। ना लगी वहां पे भी। फिर नन्द ने भी दुखी होके कह दिया - कि भैया - अगर तुझे करनी होगी तो बता फिर। नहीं तो, हमारी भी तूने तो जिंदगी बरबाद कर दी। हम भी कहां तक तेरे लिए सोचे। हमारी नन्द ने भी बहुत सहारा लगाया। उन्होंनें भी सहारा खूब दिया। उन्होंने अपना फर्ज अदा कर दिया। फिर भी बहुत मुसिबत में सहारा लगाया। इतना कोई लगा नहीं सकता। हर एक रिश्तेदार है लेकिन हमारे घर के ये ही है। अब तक अगर कोई और होता तो भाग जाता।

बहुत कुछ करे वो हमारे लिए। फिर भी, अब मुसिबत मे बहुत साथ दिया उन्होंने। कि अब तो भी करनी होगी तुझे ही करनी होगी, तेरे 2-3 बच्चे भी है, सब कुछ है, तेरे, - ससुराल वाले भी है वो सुनेगें तो क्या कहेगे।. अब पीछे कितनी लड़ाई हुई थी, जब इसी बात पे हुई थी कि - तू तो घर में बैठा रहता है और वो वहां काम करने जाती है। वो भी क्या कहेगें कि ले - लड़की घर से बाहर ना निकालो आज तक हमने अपनी और तूने हमारी लड़की से हर काम कराया। लेकिन यही सोच के तो - कि इसका गुजारा कहां से होगा। कितनी सी लड़ाई हुई थी इस बात के ऊपर।

फिर भी तुझे काम नहीं मिलता। अरे पढ़ कह - कि कोई धूप बत्ती बेच रहा है, कोने, कोने बालक भी धनिया बेच रहे हैं, कोई कुछ बेच रहा है। हम दुखी हो गए तेरे से। हमने इतने काम करवा लिए, हम कहां से लाएंगे। इतना हम भी कहां तक करें। तुझे ही नहीं आता दिमाग में। कभी कहता है कि मेरे तो पितृ (भूत, देव का असर + मृत पूर्वजों का भूत) कभी कुछ, कभी कुछ। हमारी तो बुद्धि खराब कर दी। अब हम काम करते हैं चौथा महीना हो गया। हमारी तो कोई बुद्धि खराब ना करे। अब जब हम पहले ही काम करने से पहले ही दिमाग में ये ले आएंगे कि हमारे तो ये हो गया, तो हम सफल ही कहां से होंगे। कोई भी इन्सान हो जो कोशिश करेगा ना हर काम होगा।

अब हम काम करके आते हैं, हमारी सास जब भी ये कहती है कि हमने तो आज तक इसके पैसे नहीं देखे कहां है? जिसमें कि 350 के हिसाब से लगा लो, चौथा महीना चल रहा है। कितने पैसे - 1200-1300, 1100-1200 सौ रुपये तो बैठे ही। अब पिछले महीने इतने बीमार हो गए कि डाक्टर तक के नहीं जा सके। उसकी भी जिम्मेवारी मेरे ऊपर ही है। अब वहीं पड़े, पड़े वो करना - गंद-रंद साफ करना और डाक्टर के भी ना जा क सके। वहां से ही पैसे लाके इलाज करवाया - उसने कहा कि तेरा आदमी पड़ा है। हमने तो जब 10-15 दिन ही काम करा होगा। अभी किस्मत फूट गई - मेरे तो अभी खटक गई - कि बस ये नौकरी भी गई। अब इतने दिन में तो

नौकरी लगी थी - सोचा था कि ये इन्सान बनेंगे। हर आदमी को खुशी सी होती है कि चल ये सम्भल गए। हर आदमी उम्मीद लेके यही कहता है - हमारे मां बाप भी कि अब ये अच्छी हो जाए। सबके जैसी हो जाए। फिर जब ये बीमार हो गए तो मुझे - ये हो गया। क्योंकी ना तो Factory मालिक छुट्टि देगा और ना ही आदमी लेगा। ये तो पांच, चार दिन वहां भी नहीं गया। फिर मैंने ही उन्हे भेज दिया( )जब ये साहिबाबाद मे काम करते थे।

जब ये इनके गांठ सी हुई जब Factory मे तो महीने का course हुआ था काम सिखने का। जब ये वहीं पे ये करते थे। जब भी इसने जान बूझ के छोड़ी नौकरी। वो भी नौकरी अच्छी थी। इसके बाद भी जब दो महीने हो गए तब भी ईंट से ईंट बजी। जब भी हम इतने दुखी थे। जब भी हमने कहा कि इतने दिन हो गए - अब तो चले जाओ Factory मे। जब भी रोटी बना के देती थी लेकिन रास्ते मे से ही उल्टे आ जाते थे। और झूट कह दिया कि उन्होंने तो मुझे रखा ही नहीं - कि इतने दिन हो गए जब तुमने खबर नहीं कि तो हम नहीं रखते। फिर जब तो कहे से नही गए - तो हमने भी यकीन कर लिया। अब क्या आदमी के माथे पे थोड़ा ही लिखा है कि - - या मैं उन्हे देखने थोड़ा ही गई थी। अब जैसा उसने बहकाया वैसे हम भी आ गए बहकावे मे।

फिर कितने दिन हो गए। बस अपने आप ही आई दिमाग मे। उस दिन रोटी भी नही ले गए। पर जब आदमी गया ही नही तो रखे किसे? फिर वहाँ पे चले गए और शाम तक नही आए तो - मैंने कहा - कि पता नही आज तो कहाँ गए? तो कहने लगे - उन्होंने तो ये कहा - कि जब तेरी ऐसी हालत है तो तू हल्का काम कर ले। उन्होने तो इसके पैसे भी भेजे घर तक - इतनी अच्छी नौकरी थी वो भी। नही तो कौन इन्सान भिजवाएगा। उस Factory मे लोहे का कोई पुर्जा बनता था। वाबले - वाबले बनते थे, कुछ ऐसा ही। फिर उसमें तनख्वा भी थी। यही थी - 1000-1200 रूपये। लेकिन हम तो अपनी किस्मत को यही कहते है कि हजार भी हमारे लिए बोहत है। वो भी कम नही है। अब क्यूँ जब जैसा पड़ गया पल्ले से खाते है - क्या करे? मैंने कहा कम से कम ये तो आए तो - कम से कम दाल रोटी तो चले। और भी कुछ नही।

अब नौकरी छोड़ दी। अब वो छोड़ दी। अब यहां पर लगाए। अब यहां पर लगे एक जुराब Factory में, इन्द्रापुरी मे। वहाँ तनख्वा भी अच्छी थी। बारह घंटे की Duty थी और 1500-1600 रूपये थी। वहाँ पे भी ये २ दिन गया। वहा भी इसने नही करी। वहाँ पे जुराब बनती थी। फिर 5-6, महीने तक जब बैठे रहे। फिर तो रबड़ वाली Factory पकड़ी - वो बाने पे वाली - जिसमे रबड़ बनती थी। उसमेकरी

दो तीन महीने तक। साझे की थी वो Factory. फिर वो बन्द हो गई। फिर हम तो घर जा रहे थे जब-तब भी इसने 3-4 महीने छोड़ी नौकरी। जब हम अपने पीहर चले जाते हैं तो हमारा आदमी समझ जाएगा दूसरे के उधार के पैसे भी उतार देगा। वहां से हम बच्चों के पैसे भी ले आएंगे और आप भी रह आएंगे। लेकिन ये आदमी ऐसा है कि इसे ये भी चिन्ता नहीं कि चाल वो वहां पर रह रही है। अब आदमी को सम्भालना तो चाहिए। कहता मेरी माँ का- तू ऐसा ही बैठा रह। और कभी अपनी औकात से पहले लेने नहीं आएगा। पीहर तो हमें अकेले ही जाना पड़ता है, कभी नए, नए ही चले गए सोच। अब तो हमारे घर के दिल्ली मे ही आ गए। अब तो हम जा पाते नहीं।

अब भी इतना सीधा पन है। घर से आ रहे थे वहां रास्ते मैं। पैसे सारे उनके पास थे। मैं 'पुराली चौक' पर उतर गई। फिर भी वहां मेरे पास एक पैसा नहीं था। वो आदमी मिल गए उन्होंने बेचारो ने मुझे 10 रुपये दिए। अब चलो मैं तो अनपढ़ हूं। मुझे तो आदमियों ने उतार दिया कि वो आ गया पुराली चौक। एक तो इतनी गलती करी। अपनी सवारी के पास नहीं थे रहे। अपने आप आगे खड़े हो गए हमें पीछे खड़ा कर दिया। अब उतरना मुझे सारे पास था।

उतार मुझे दिया पुराली चौक पे लोगों ने । अब हाथ मे एक पैसा भी नहीं था। अब जाऊं तो जाऊं कहां। इतनी शौक। । जानवरी की बात है और हाथ मे एक पैसा भी नहीं और बारिश पड़ रही थी। अब बताओ कैसे कहां जाऊं ? किससे पैसे मांगू। वैसे तो कपड़े इतने अच्छे पहन रही थी और वैसे इतनी वो बन रही थी। और वैसे पैसे भी पास नहीं। वो तो भले इन्सान मिल गए बेचारे, भगवान की दया से। और मैं वहां (बाई पास) देखा उतर - ये वहां भी ना मिले - ये तो मेरे से भी ज्यादा बावले निकले। 10वी पढ़े हुए थे - सीधे वहां पहुंचे थे बस अड्डे। मैं फिर भी रल के (घूम घूम कर) घर आ गई जिन्दी। ये कहने लगे- कि मैं तो बस अड्डा पहुंचा वहां से आ रहा हूं। मैंने कहा कम से कम बाई पास पे तो इन्तजार किया होता, वहां पर भी नहीं मिले। जो वो मुझे दस रूपये नहीं देते तो मैं कैसे पहुंचती घर। मैं इस चक्कर मे कि चल आगे तो मिलेगी। कुछ ज्यादा ही सीधा -पन है इनमें। घना ही। अगर इन्हे कुछ लेने भेज दे तो दरवाजे पर खड़े हुए थे ही देखते रहेंगे कि कोई मुझे देख तो नहीं रहा। बस आधी लड़ाई तो इसी बात पे होती है मेरी।

एक साफ ~~सफाई~~ भी नहीं। जैसा साफ सुथरा रहता है आदमी। बस लड़ाई क्या है ऐसी ही आदत है।

मुझे हमारी बुढ़िया कहेगी - इसे तो जवानी चढ़ रही है। ये तो ठण्डे पानी मे नहा लेगी। मैंने कहा इसे बुढ़ापा आ गया - गर्म पानी मे नहाएगी। ऐसी ऐसी बात है।

मैंने तो पहले स्कूल मे नौकरी की (आया की। फिर एक ब्याह मे काम किया ऐसे ही बर्तनों का। फिर राखी, वाखी बनाती थी। फिर अब एक और ब्याह मे काम कर रही हूं।

बस मुझे इस बात का दुख है कि हमने पढ़ा चाहा, हमें अपनी किस्मत मे यही रोना है कि हम आज पढ़ लेते तो स्कूल मे teacher भी बन सकते थे। Private भी बनते तो इज्जत तो बहुत थी। 500-600 रुपये महीना भी लेते और इज्जत भी। अब क्या करें? अब देखने वाला तो यही कहता है कि वैसे तो बहुतेरी तो है, पीहर भी सब अच्छा है। अब हमारे क्या चीज नहीं पीहर मे? सब कुछ है। अब हमारी बहन की शादी हो रही है। सब चीज दे रहे हैं उसे रंगीन T.V. क्या, Furniture, सब कुछ! कोई चीज की कमी नहीं है - इतना तगड़ा ब्याह हो रहा है। अब किस्मत है - अब उसने (बहन ने) inter कर ली, उसकी सास कह रही है कि आगे पढ़ना चाहती है तो पढ़ ले। सब कुछ पढ़े लिखे हैं। अब वो तो कहता है कि- तू तो फंस रही है - जैसा तुझे फंस रहा है।

मैंने कहा बता भईया क्या करें? तेज़ तो बहुतेरी थोड़ा सा। और पढ़ा देते। कहीं भी नहीं मार खाती। मैं तो कहूँ भगवान ने मुझे खामाखवा मे लड़की बना दिया। मुझे तो लड़का बना देता अच्छा था। दिमाग तो बहुत है लेकिन पढ़े कुछ नहीं। क्या करें? मैं तो कहूँ कि तू तो चूड़ी पहन ले, घर में बैठ जा। मैं होती आदमी। खा-मा खवा मे तुझे आदमी बनाया। बुढ़िया को भी कहूँ। कि राज़ी हो रही है - क्या लड़का है ये? शर्म आती है इतनी। तुझे तो खामाखवा लड़का बनाया। जब नौकरी करते भी आलस आता है। अब मैं ये नौकरी कर के दिखा देती।

⇒ आप वोट डालती हैं?

हाँ वोट तो हम डालते हैं, जिसे मोहल्ला देता है, उसी को। मोहल्ले के साथ हैं हम तो। या नहीं? मोहल्ले से अलग कहां जाएंगे। क्यों? खाने को कोई नहीं देता चाहे किसी को दे दो। ये तो वो है कि समाज में रहकर सभी कुछ करना पड़ता है। इसी मोहल्ले के साथ ही है सभी। जब कोई जैसे कह दे - उसी को डाल देते हैं। इसमे समझ की कोई बात नहीं। हाँ एक बार तो हुआ था ऐसा कि ये किसी और को दे कर आए और मैं किसी और को। और तो ध्यान नहीं।

अब की बार तो बल्कि मैं डाल के भी नहीं आई। इस वजह से कि हमारा भाई आया था। ये तो मुझे याद नहीं किस पार्टी वाटो को डाली। अब ये साल का तो हमारा भाई हो जाएगा उससे पहले जब ये होने वाला था जब कभी ये vote पड़ी थी। जब मैंने डाली थी। अब से कई साल की बात हो गई होगी। अब ऐसे ही है। एक, ये जो घर है - वो कहते थे कि इसको तरफ डाल दो, जैसे ये Congress की तरफ कोई उठा। ज्यादा तो हम Congress की ही तरफ है। ज्यादा तर तो इन्हीं को देते है। हमारे पिताजी भी शुरू से ही पसंद करते थे Congress ही।